

माटिक दीप



श्री आरसी प्रसाद सिंह

श्री रामदेव भगत

तृतीय वर्ष 'कला' (सम्मानित वर्ग)

क्रमांक - १४८

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय

दरभंगा

माटिक दीप

रचयिता

श्री आरसी प्रसाद सिंह

प्रकाशक :—

अ० भा० मिथिला संघ

कैलास कविराज लेन, कलकत्ता-६

मूल्य १॥)

मुद्रक—

पंकज प्रेस

१६ बी, नरेन्द्र सेन स्क्वायर, कलकत्ता-६

माटिक दीप

—:०:—

वाणी-वन्दना

जननि, वीणा-वादिनी !
व्याप्त छी संसार में अहँ,
विपुल लोकाह्लादिनी !
जननि, वीणा-वादिनी !

मोह-तिमिरक नाश हो;
विगत रजनी भेल, मिहिरक
आब शारद-हास हो।

विजय - मंगल - शंख फूकू,
अयि अशेष निनादिनी !
जननि, वीणा-वादिनी !

युवक देशक क्षुब्ध यौवन;
अग्नि-बीन बजाउ, जय-जय,
करथ् निर्भय क्रान्ति-वाहन !
दिअह नव-साहस, अखण्डित,

शक्ति-प्राणोन्मादिनी !
जननि, वीणा-वादिनी !

शक्ति-अर्चना

मधुर-सुमधुर-हासिनी !
त्रिपुर-सुन्दरि, अयि महेश्वरि !
सर्वभूत - निवासिनी !
मधुर-सुमधुर-हासिनी !

शिव-चतुर्मुख-विष्णु-पूजित,
अहँक मन्दिर-द्वार रहइछ
भक्त-कोकिल-वृन्द-कूजित !
भैरवी, धूमावती,

बगलामुखी, अविनाशिनी !
मधुर - सुमधुर - हासिनी !

जखन करइछी अहां नर्तन;
खँसि पड़इ अछि मुक्त कुन्तल,
हरक खुलि जाइछ त्रिलोचन !
सभय दनुज, त्रिलोक कम्पित;

प्रलय-नृत्य-विलासिनी !
मधुर-सुमधुर-हासिनी !

दुर्गा-स्तवन

मुण्ड-माला-धारिणी !
छी अहां जगदम्बिका, मा,
छी अहीं भवतारिणी !
मुण्ड-माला-धारिणी !

शान्ति बनि कय शंकरी,
क्रोध मे कल्पान्त छी, दिशि—
दश-भुजा प्रलयंकरी !
भव सशंकित देखि भृकुटी
अहँक नवयुग-कारिणी !
मुण्ड - माला - धारिणी !

छथि अहिंक अनुचर विधाता;
थिक कुपुत्रक जन्म सम्भव;
किन्तु, कथमपि ने कुमाता।
विश्व पर बरसाउ करुणा
अपन सुख-संचारिणी !
मुण्ड- माला-धारिणी !

मातृ प्रार्थना

श्वेत-शतदल-शायिनी !
मा, अहां गौरी, उमा छी;
छी अहीं कात्यायिनी !
श्वेत-शतदल-शायिनी !

धृति, क्षमा, जयमंगला;
अहंक छवि कमनीय-कोमल,
कान्ति देहक कज्जला !
निखिल जग मे मातृरूपे

संस्थिता वरदायिनी !
श्वेत-शतदल-शायिनी !

असुर-गौरव - घालिनी;
चरण रिपु-दल-रुधिर-रंजित,
रक्त—जिह्वा, कपालिनी !

भक्ति मे निज पदक प्रतिदिन
रति दिअह अनुपायिनी !
श्वेत - शतदल - शायिनी !

भैरव-स्तुति

जय-जय भैरव, जय-जय कराल !
जय जय दैत्यदलन, जय महाकाल !

मस्तक पर शोभित चन्द्रकला,
जाह्नवी तरंगित पुण्यजला !
प्रलयाग्नि शिखा, लोहित ललाट !
शिर जटाजूट मे व्यालराट् !

भस्मांग-राग-चर्चित, विशाल !
जय दैत्य दलन, जय महाकाल !

कामारि, योग-मुद्रा-प्रशान्त !
रवि कोटि-प्रभा-कमनीय कान्त !
कैलाश - विहारी, शूल-हस्त !
भक्तारविन्द-दिनमणि प्रशस्त !

हे नीलकण्ठ ! भुजगेश माल !
जय-जय भैरव, जय-जय कराल !

जन्मभूमि

जमन्भूमि, जननी !
पृथ्वी-शिर-मौर मुकुट,
चन्दन संतरिणी !
जन्मभूमि, जननी !

वन-वन मे मृगशावक,
नभ मे रवि-शशि-दीपक;
हिमगिरि सँ सिन्धु-तलक

विपुलायत धरणी !
जन्मभूमि, जननी !

दिक-दिक मे इन्द्रजाल;
नवरस-मय आल-बाल !
पुष्पित अंचल रसाल,

नन्दन-वन - सरणी !
जन्मभूमि, जननी !

शक्ति, ओज प्राणमयी;
देवी, वरदान-मयी
प्रतिक्षण कल्याणमयी !

दिवा और रजनी !
जन्मभूमि, जननी !

स्वदेश

धन्य, धन्य ई मिथिला देश!
जतय अन्नपूर्णाक ताल पर
नाचथि भैरव रूप महेश!
धन्य, धन्य ई मिथिला देश!

दक्षिण पवन डोलावय चामरि!
मंगल गीत सुनावय सामरि!
बम बम कयने भक्त गण विचरय
गंगाजल सँ भरि भरि कामरि!
सजल शस्य श्यामल धरती पर

अमृतक वर्षा हरय कलेश!
धन्य, धन्य ई मिथिला देश!

शुक पिक सुरवाणी उच्चरय!
कण कण जतय ज्ञान-चर्चा मे.
शंकर ब्रह्मो कैं ललकारय!
कमला आँगन भवन बुहारथि,

लक्ष्मीपतिक दिगम्बर भेस!
धन्य, धन्य ई मिथिला देश!

नाना ओषधि, पुष्प, पत्र-दल!
विविध ऋतुक अनुगामी तरु, फल!
रस सँ भरल नदी-नद-जल सँ
सिंचित जतय सर्वदा भूतल!

मौलसरी-तर बैसि मैथिली
युवति स्नान कय बाँधथि केश !
धन्य, धन्य ई मिथिला देश !

द्वार द्वार पर भरल बखार !
घर घर मे सुख शोभाधार !
मान-पूर्ण आतिथ्य जतय अछि,
कोमल वचन सरल व्यवहार !

शीतल स्वभाव, रूप ओ गुण मे
मधुर पुरुष सँ प्रकृति विशेष !
धन्य, धन्य ई मिथिला देश !

बाड़ी - झाड़ी लतरल पान !
पोखरि-पोखरि फुटल मखान !
राह बाट मे गुंजित होइछ
विद्यापतिक मनोहर गान !

गाम - गाम मे धर्म धुरंधर,
पढ़थि पढ़ावथि मीन कि मेष ?
धन्य, धन्य ई मिथिला देश !

बाजि गेल रनडंक

बाजि गेल रनडंक, डंक ललकारि रहल अछि।
गरजि गरजि कय जन जन कैं परचारि रहल अछि।

की बैसल आबहु रहबै रे तरुण स्वदेशक ?
आबहु त रे कर यादि द्रुपदाक सुकेशक।

कोशी कमला उमड़ि रहल, कल्लोल करै अछि।
के रोकत ई बाढ़ि, ककर सामर्थ्य अड़ै अछि ?

स्वर्ग देवता क्षुब्ध, राज सिंहासन डोलै।
मत्त भेल गजराज, पीठ लागल अछि झोलै।

चलि ने सकै अछि आब सवारी हौदा कसिकै।
ई अदराक मेघ ने मानत, रहत बरसि कै।

एक बेरि बस देल जखन कटिबद्ध चुनौती।
फेर आब के घूरि तकै अछि साँठक पौती।

आबहु की रहतीह मैथिली बनल बन्दिनी ?
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनक नन्दिनी ?

डंक बाजि गेल, आगि लंक मे लागि रहल अछि।
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि।

अधिकार

माँगि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ-जन-वाणी !
माँगि रहल छी हम विदेह—भू—
भाषा चिर-कल्याणी !
माँगि रहल छी हम कवि विद्या-
पतिक साधना-वैभव !
माँगि रहल छी हम हिमवानक
अमृत-स्त्रोत चिर-अभिनव ।
जहाँ बहै कोशी ओ कमला,
गंडकीक जल-धारा ।
ओ धरती ने आब रहत हे
किन्नहु मानव-कारा ।
शस्य-श्यामला भूमि कतय ?
हा ! कतय रूप-रस-निर्झर ?
सदा वसन्त-बहार कतय गेल ?
गेल कतय कोकिल-स्वर ?
भरल काश-कुश सँ अकाय-वन,
धीपल बालु उड़ै अछि ।
मरघट भेल स्वर्ग-वन, गीदड़-
गीध-कुकुर कुचरै अछि ।
बैस कण्ठ पर क्यो बरजोरी
स्वर नहि दाबि सकै अछि ।
मूग दररि सदिखन छातीपर
मुँह नहि जाबि सकै अछि ।
लेब अपन अधिकार आब हम,
अपन महालक पानी ।
माँगि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ-जन-वाणी ।

बाढ़ि-सन्देश

हे ऊधो, माधो सँ कहबैन्ह,
अपने गेलाह विदेस।
हमरा लै दय गेलाह एतय ई
भुखमरींक कलेस।

एको बूँद आषाढ़ ने बरिसल,
साओन आयल बाढ़ि।
चूल्हिक पुत्ता पानि चढ़ल अछि,
माए कनय छथि ठाढ़ि।

एहन बाढ़ि कहिओ ने देखल,
कि छल कर्मक जोग।
कोन पाप ई चढ़ल ? कहै छथि
बूढ़ पुरनिया लोग।

कमला बढ़ली, कोसी चढ़ली,
चलली दौड़ि करेह।
बागमतीक बान्ह सभ टूटल,
ऊँच ताड़ सन ढेह।

बीच सड़क पर नाव चलैतअछि,
भरि छाती अछि पानि।
नढ़िया-कुक्कुर एक संग भेल,
साँपक कि अछि मानि ?

बरदो मुइलैन्ह, कनटिरबा कैं
लागल छैन्ह बोखार।
बाछा गाय अनेर भेल छैन्ह,
उदबन चोर चुहार।

मोचा देल मकइ सभ सूखल,
दहि गेल रोपल धान।
घर टा जे छल, सेहो बैसि गेल,
बान्हब कतय मचान?

सामा भासल, कोदो भासल,
नहि भेटैत अछि माडु।
चलत अनोने बिनु दालुक, दिन
कतेक रिलीफक चारु?

दुबिधा

आइ दहों दिस नयन-भ्रमर
ताकइ अछि विकल हताश।
कतहु ने एकोटा भेटै छैक
कुसुमक अरुण हुलास।
बदलि गेल की काल ? बदलि गेल
की पुरजन ? की देस ?
किछु ने बूझि पड़ै, आबि गेल
अतेक कतय सँ क्लेश ?
माय माय कहि शिशु कलपै अछि,
भरल आँखि मे नोर।
ग्राम-ग्राम मे आर्तनाद अछि,
नगर नगर मे सोर।
कनहा हथिया कतेक बरिस गेल,
कतेक बहल जल-धार।
तइयो बुझल पियास ने, मानव
करैछ हा—हा—कार।
चान-सुरुज छथि वैह, जगत मे
करैत विमल प्रकाश।
मनक तिमिर कैं गगन दीप की
कै सकैत अछि नाश ?
अनाहार सँ मुख मलीन अछि,
जीवन-कुटी अन्हार।
दैन्य, दुःख गृह-गृह मे निर्भय
करैछ मुक्त बिहार।
भाव रंगिनी रूसल, आहत
नीरव बीनक तार।
प्रकृति-सुन्दरी साजि रहल अछि
ऋतुराजक शृङ्गार।

कुहुकति कोइली, फुटत कुसुम कुल,
उड़त मधुर मकरन्द।
झनक-झनक बाजत पग-पायल,
बरसत रस आनन्द।
घाट बाट पर कुंकुम बरिसत,
रंग-अबीर-गुलाल।
रसपिचकारी चलत, लाल हैत
चूनरि, सूनरि - गाल।
आम्र मंजरी पर स्वर साधैत
आओत मधुप किशोर।
पंछी झुम्मर गाओत, नाचत
ताल-ताल पर मोर।

लोक दृष्टि सँ एक कल्पना,
और सत्य थिक अन्य।
क्षुधा दग्ध जन आगि-लगल
देखैत अछि सकल अरण्य।
जकरा चाही मुँह मे रोटी,
और कण्ठ मे पानि।
से त्रिकाल मे की दै सकैछ
चन्द्र किरण कैं मानि?

खा ने सकै अछि, पीबि ने जकरा,
से बूझत की लोग?
नव वसन्त शोभा के देखत?
आँखि पेट मे रोग।

मिथ्या कोन? सत्य की? दुबिधा
होइत अछि एहि ठाम।
गामक लेखे बताह छथि ओझा,
ओझा लेखे गाम।

कलि-कौतुक

कलि कौतुक विस्तार करै अछि।
हित-अनहित अपनो नहि बूझै,
विपरीते संसार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

भाए सहोदर मन ने भावै,
आन-आन सँ प्रीति लगावै,
गृह-लक्ष्मी कैं तिरस्कार कय
वेश्या सँ अभिसार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

घृणा होइत छैक गङ्गाजल सँ!
तृप्ति पबै अछि पानी कल सँ!
श्वानक त सत्कार, धेनुपर
प्रतिदिन चरण-प्रहार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

शिखा-सूत्र पाखण्ड भेल अछि।
श्रद्धा-ज्ञान पड़ाए गेल अछि!
भगवानो छथि दम्भ साधने,
क्यो ने धर्म-विचार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

कुलाचार अप्पन सभ मेटल,
बापहु कैं धै कय हुरपेटल!
घर मे माए बिलल्ला, बाहर
पूत अछूतोद्धार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

उदर-निमित्ते साधु-बबाजी,
गाल बजाबै कतहुँ सुराजी !
चानन-ठोप देखि कय ककरो
महिष-जकाँ फुत्कार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

सर-सोलकन बाबू बनि घूमै,
आओर चरण तकरे द्विज चूमै,
पण्डित गूड़थि भाँग बैसि कय,
अन्त्यज वेदोच्चार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

हड्डी-पाँजर सभटा बैसल,
तरुण सौख तइओ ने बिसरल;
मांग फाड़ि, एना लै सम्मुख
स्त्रीगण-जकाँ सिंगार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

दूध-दही भेल दुर्लभ भारी,
हकन कनै अछि घीअक टारी।
राममड़ैया सँ कोठा धरि
वनस्पतिक व्यवहार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

पुण्य बनल अछि चोर बजारी !
सेठ भेल शठ, चोर, जुआड़ी।
टीक कटौने भरिसक दमड़ी
झा चामक व्यापार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

अमृत किरासन तेल भेल अछि!
सगरो ठेलमठेल भेल अछि!
रेलक नांगरि पकड़ि मुसाफिर
वैतरणी कैं पार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

बारम्बार अकाल पड़ै अछि!
समय बूझि विकराल पड़ै अछि!
अन्न - वस्त्र लै जनता चारू
दिशि सँ हाहाकार करै अछि!
कलि कौतुक विस्तार करै अछि!

निष्फल शास्त्र पुरानक चर्चा।
नीक नाच - रंगक बरु खर्चा।
लाड़ि - चारि एकहि लड़ना सँ
सब किछु बंटाधार करै अछि!
कलि कौतुक विस्तार करै अछि!

वसन्त

आयल अछि एखन नव वसन्त !
सखि, जखन हमर जीवन-कानन मे
पसरल ग्रीष्मक स्वर ज्वलन्त !
आयल अछि एखन नव वसन्त !

उड़ि गेल कोकिला कामनाक
उपवन सँ सुन्दरता - विहीन !
चुपचाप बहावथि लोचन सँ
जलधार तृषित चातकी दीन !
प्रेमक कालिन्दी मे ने वेग;
तट शून्य, उपेक्षित तरु पल्लव !
सहसा निकुंज मे सुनि पड़इछ
नहिं नृत्य-नूपुरक कल-कलरव !

सखि; आब सुनू, आयल वसन्त;
हा ! जखन यौवनक अति-अनुपम
सुखमय सपनक भय गेल अन्त !
सखिं, आब सुनू, आयल वसन्त !

लगि गेल आगि सुमनक उर मे,
जरि रहल सौरभक नन्दन-वन !
एहि चिता-ज्वलन मे सम्भव हो
अलि, कहू कोना मधुपक गुंजन ?
इच्छाक शेष क्षण मे आनल
सुकुमारि कियैक ई उद्दीपन ?

सखि, निमिष-भरिक जीवन, अम्बर मे
संध्या - समयक चित्रित घन !
आयल अछि एखन नव वसन्त !
सखि, जखन हमर आगां पसरल
अछि हुताशनक जगती अनन्त !
आयल अछि एखन नव वसन्त !

ज्वालाक तरंगावलि आकुल,
छुबि अबइछ चंचल क्षितिज-छोर !
प्राची सँ उमड़ि, प्रतीची धरि
ई पावक - पारावार घोर !
नहिं पहुँच सकै अछि मलयानिल,
सन्देश उत्सवक नहि अशेष !
ओहि विपिनक हम छी निर्वासित,
ओ हमर प्रियतमक एक देश !

शेफालिका

मधुकरी, एहि विश्व - विपिनक
हम सरल शेफालिका छी।
छवि - सुरभि सँ निज स्वयं
मातल नवल मधु-बालिका छी।

नित्य विहगावलि प्रभातहि
उठि हमर मृदु विरुद गावथि।
आबि दक्षिण देश सँ
पावन पवन हमरा जगावथि!

चकित विस्मित चौंकि जहिना
आँखि खुलि जाइछ हमर कल;
बाँधि किरणक पाश सँ
नूतन तरणि हमरा लजावथि!

खसि पड़ल आकाश सँ जे,
विकच तारक - मालिका छी।
मधुकरी, एहि विश्व-विपिनक
हम सरल शेफालिका छी।

अप्सरी नन्दन - वनक हम,
यक्षिणी अलकाक उज्ज्वल!
गन्ध - व्याकुल कए रहल छी
हास सँ निज नृत्य चंचल!

प्रिय, किनक अरविन्द - अंगुलि—
स्पर्श सँ सुधि बुधि बिसरि सब,
भूमि पर असहाय झर - झर
झड़ि पड़ै छी मृदुल - कोमल !

जगत - मासस मानसर मे
चपल श्वेत मरालिका छी।
मधुकरीः, एहि विश्व - विपिनक
हम सरल शेफालिका छी।

जागि निशि-भरि शुक्ल वसना।
सुन्दरी अभिसारिका हम;
कोन निठुरक प्रिय - प्रतीक्षा मे
प्रेणय - परिचारिका हम

आगमन सँ हाय, पूर्वहि
चटुल मधुपक वृन्त - च्युत भए
खँसि पड़ै छी उडु - मुकुल - सम
चिर - अनन्त कुमारिका हम !

पवन - रथपर चपल वन-वन मे
सुरभि - संचालिका हम !
मधुकरी, एहि विश्व विपिनक
हम सरल शेफालिका छी !

श्वास सँ सुरभित हमर
उन्मद रहथि प्रातः समीरण !
अरुण सालस नयन पाटल—
पटल जागर-खिन्न उन्माद !

मृदु-मृदुल पत्रांक मे अति—
शिथिल वासक - सज्जिका हम
साँझ सँ कय भोर दइछी;
वेदना पुनरपि चिरन्तन !

स्निग्ध अंचल दान दय
लघुवय जगत-शिशु-पालिका छी !
मधुकरी, एहि विश्व - विपिनक
हम सरल शेफालिका छी !

गीत

मञ्जुल मन्दार - मुकुल—
अभिनव वनकन्या !

चपला-चल-चपल-हास,
मलयज-मधु-अगुरु-वास;
नूपुर-रव-शिथिल-श्वास,
नृत्यमती वन्या !
अभिनव वनकन्या !

प्रति गति मे कल्प भंग,
बंकायित अंग - अंग
पद-रज मे नत अनंग
पूजित सुरधन्या !
अभिनव वनकन्या !

ऋतुराज

शीत बीत गेल; भीत हेमन्त।
आयल नव ऋतुराज वसन्त।
दिशि दिशि बरिसय कुसुम-परागु।
मातल जन, मनु खेलय फागु।

शीतल मन्द सुगन्ध समीर।
सुख सँ पुलकित सभक शरीर।
लागल बढय प्रखर दिनमान।
कुंज-कुंज मे भ्रमरक गान।

मह-मह मँजरल करय रसाल।
कुहु-कुहु कुहुकय कोकिल-बाल।
संग सखा लय सकल समाज
आबि गेल ऋतुपति युवराज॥

चितचोर

कमल-नयन चितचोर !
सखि हे ! बाँधल प्रेमक डोर।
कमल - नयन चितचोर !

पीताम्बर पर नयन लुभायल
बंशी - धुनपर कान।
वृन्दा विपिन - कदम्बक तरु मे
बसल हमर अछि प्राण।

नहि देखल भरि आँखि रूप ओ,
भेल नगर मे सोर।
कमल-नयन चितचोर।
सखि हे ! बाँधल प्रेमक डोर।

केओ ने बूझै हमर मनक दुख,
केओ नहि सखि पतिआए।
जरि-जरि मरै शलभ दीपक पर,
प्रीति ने छोड़ल जाए।

बाट देखैत दिन साँझ भेल सखि,
अधरतिया भेल भोर।
कमल-नयन चितचोर।
सखि हे ! बाँधल प्रेमक डोर।

रूप-वर्णन

चख-चकोर भख चाहए रे
मुख चान समान।
देखि देखि डर पाबए रे
बिजुरी - मुस्कान ।

कच-नागिनि खा जाइति रे
धए मानस - मोर।
जौं ने रहितए लागल रे
कम्पा सुकठोर ।

तोड़ि देत कदली - तरु रे
गज मत्त समाज।
भय सँ पैर न बढबए रे
लखि कटि - मृगराज।

अधर - विम्ब - फल खाइत रे
शुक लोभी जाति ।
देखि ने साहस होइछ रे
भौं व्याधा ताँति ।

यौवन - उपवन मह - मह रे
फूलल अंग - अंग।
भ्रमर देखि सकुचल मन रे
तन चम्पा - रंग।

उपालम्भ

सुनह हे भ्रमर !
एतेक तोहर किऐ तृषित अधर ?
सुनह हे भ्रमर !

कुंज-कुंज मे करैत भ्रमण,
फूल-फूल सँ करैत रमण,
भरैत रहै छह मधु गुंजन।

सुनह हे भ्रमर !
कतेक तोहर छह प्यास प्रखर ?
सुनह हे भ्रमर !

नहि देखैत छह पथ कि दिशा !
बूझि पड़ै छह दिन ने निशा !
कि अधराति कि कनक-उषा !

सुनह हे भ्रमर !
विकल फिरैत छह डगर-डगर !
सुनह हे भ्रमर !

रूप-पियासल, मातल आँखि,
रस मे फँसल छह दूनू पाँखि;
घर-घर जाइछ अनुखन झाँकि,

सुनह हे भ्रमर !
आब ने रहब हम तोहर नगर !
सुनह हे भ्रमर !

प्रणय-छल

कारक नहि विश्वास।
सखी हे, कारक नहि विश्वास।

यमुना-पुलिन, कदम्बक कानन,
मुरली मधुर बजाय।
तन, मन, धन, यौवन सरबस लय
छोड़ि देल निरुपाय।

पूण - कलाधर शरद - निशा मे
कैल नृत्य ओ रास।
कारक नहि विश्वास।
सखी हे, कारक नहि विश्वास।

प्रीतक लता लगाय विदा भेल
वनमाली भय क्रूर।
अनुपल - छन जे रहै हृदय मे,
गेल कतय से दूर?

लोक-लाज जकरा लै तेआगल,
जगत करै उपहास,

कारक नहि विश्वास।
सखी हे, कारक नहि विश्वास।

श्याम मेघ विद्युत् सँ मुसुकति
लगा देत अछि आगि।
वन-वन कुसुम-गन्ध सँ मातल
विरह उठै अछि जागि।

कृष्ण नाम लै भ्रमर कान मे
कहि-कहि जाय उदास।
कारक नहि विश्वास।
सखी हे, कारक नहि विश्वास।

पद

काल-स्रोत मे कमल-फूल-सम
जीवन भासल जाए।
रस-समुद्र मे यद्यपि डूबल,
प्राण पियासल जाए।

जे समर्थ छथि, पार होथि
भुजबल सँ जोर लगाए।
हम त अहिंक भरोसे बइसल,
अछि ने आन उपाय।

घर-घर मे पाओल प्रसाद सभ,
पाहुन लेल जुड़ाय।
एहन अभागल कि हमरे प्रिय,
आइ उपासल जाए ?

पाथर कैं पसिझावल अनुखन
लोचन - नीर बहाय।
भेल केकर सुख भारी ? कहु के
आनक दुख पतिआए ?

रूप हृदय मे अहिंक और मुख
नामक अहिंक दोहाए।
गहि कै चरण आब हम धैलहुँ,
सुमिरन एक सहाय।

विरह

माधव - माधव रटि - रटि राधा
भय गेली माधव रूप ।
राधा - राधा करइत अनुखन
वन - वन फिरथि अनूप ।

माधव ! अहाँ छी कतेक कठोर !
हृदय बज्र - सम भेल अहाँ केर,
पाथर पसिझय नोर !

प्रणय-प्रीति - रस - मद सँ मातलि
धरथि चरण असँभार ।
छूटि खँसल मंजीर, कण्ठ सँ
टूटि पड़ल मणिहार ।

कबरी-ग्रन्थि शिथिल भेल फूजल,
धूरि - मलिन छन्हि माथ ।
विरह कयल तन अहह ! एहन कृश,
कंकण छोड़ल हाथ ।

मजरायल रसाल - वन, आयल
मधुवन मे मधुमास ।
कुञ्ज - कुञ्ज मे कोकिल कुहुकय,
कुसुम - कुसुम पर हास ।

बाजय बीन भ्रमर फेर लागल,
उठल मदन-स्वर जागि ।
लाल पलाश-कुसुम-वन फूलल,
लागल सौरभ-आगि ।

दक्षिण-पवन हलाहल बरिसय;
चन्द्रकिरण सन्ताप ।
छन मे हँसथि छने मे कानथि,
छन मे करथि प्रलाप ।

कउखन वेणु बजावथि, पहिरथि
पीताम्बर - वनमाल ।
बैसि कदम-तर अपलक देखथि
यमुना - तीर - तमाल ।

राधा - राधा रटइत राधा
वन-वन फिरथि अधीर ।
प्राण भेल माधवमय हरि हरि
बाँचत कोना शरीर ?

डुमरीक फूल

फूल डुमरीक भेल छी!
आइ त अपने, देखै छी,
फूल डुमरीक भेल छी!

की कहू, किछु ने फुड़ै अछि!
गर्द अखनहु धरि उड़ै अछि!
जानि ने; कत घेरि अपनेक
द्वार सँ फिरि गेल छी!
फूल डुमरीक भेल छी!

दर्शनो भय गेल दुर्लभ;
भेल आशा-दीप निष्प्रभ!
एकटा हमरे एहन त
नहि बुझै बुड़िलेल छी?
फूल डुमरीक भेल छी!

पंथ जोहैत आँखि बइसल,
मर्म मे अछि बान पइसल!
के कहौ, ई किऐक अपने
कय रहल नटखेल छी?
फूल डुमरीक भेल छी!

जौं एही पर होइ राजी,
फेरि जीवन - भरि ने बाजी;
दूध मे आमिल जकाँ हम
दुनु गोड़े अनमेल छी !
फूल डुमरीक भेल छी !

गजल

अहाँ कैं बिना प्राण आकुल रहइ अछि।
कृपा-दृष्टि लय एक बातुल रहइ अछि।

गुलाबी लतापर, मधुर काँट - वन मे,
पड़ल छी, जेना प्रेम - मातल रहइ अछि।
निमेषो अहाँ कैं ने यदि हम देखइ छी,
हृदय मे, ने जानि, के मंथन करइ अछि।

बहुत भेल दिन, आब दर्शन दिऔ हे।
अहाँ कैं बिना किच्छु मन ने करइ अछि।
न जीबक भरोसा, आ ककरो ने आशा।
विरह- क्षण गनैत सिर्फ साँसे चलइ अछि।
हमर त कहू जे हेरायल 'छि प्राणे।
देखइ छी जिम्हर, आँखि ओझर लगइ अछि

नचारी

गे माए, एहन जमाए !
सपनो मे जे रूप ने देखल,
से आब के पतिआए ?
गे माए, एहन जमाए !

बूढ़ बरद पर मृगछाला छैन्हि,
भांग पीबि भकुआए ।
गरदनि मे छैन्हि हाड़क माला,
डिम डिम डमरु बजाए ।
गे माए, एहन जमाए ।

भूत - प्रेत, वैताल संग छैन्हि,
जमक सहोदर भाए ।
मैनाक आँखि नोर सँ डूबल,
सखि सब गेली पड़ाए ।
गे माए, एहन जमाए ।

की त सनकि गेलाह नारद जी,
की हिमवन्त बताह ।
रहथु कुमारि आब, ने बुढ़ सँग
गौरिक हैतन्हि बिआह ।
गे माए, एहन जमाए ।

कहछि चतुर्मुख सुनु हे हिमाचल,
ई थिकाह त्रिभुवन - नाथ।
मंगलमय अपनहिं सँ अयलाह,
धरताह गौरिक हाथ।
गे माए, एहन जमाए।

गँवरमसला

बुढ़ भेल बकरी,
हुराड़ सँ ठट्ठा !
बुड़िबक विद्यार्थी कैं
भरि सूप भट्ठा !

दूर छी ! दूर छी !
अहाँ सनक लोक !
फेरि जाएब, बैसि जाऊ,
लागि गेल टोक !

जुनि पूछू, आइ कालुक
मानुखक काज।
ढोल जकाँ बजै छथि,
करै छथि सुराज।

चीनी क त दर्शन ने,
चाह मे पड़ै नोन।
चूड़ो धरि जौं भेट जाए,
दहीक गप्प कोन ?

 

एहन वर्षा कहिओ ने देखल,
स्वाती ढरल नोर।
अगहन मे बाघमती कमला
मारै छथि हिलोर

परजा सब हकरोश करै अछि,
आब ने बाँचत प्राण।
कतय आंगुर कान मे दै कय
सूतल छथि भगवान ?

दीपमालिका

नवीन युग, नवीन जग,
नवीन मुक्ति-बालिका !
स्वतंत्र देश मे खिलल
नवीन दीप - मालिका !

कि जगमगा रहल गगन,
प्रदीप सँ भवन - भवन !
कि दिग्दिगन्त सँ मधुर
उतरि रहल अरुण किरण !

शलभ प्रगल्भ अछि कि चमकि
रहल व्योम - तारिका ?
स्वतंत्र देश मे खिलल
नवीन दीप - मालिका !

अमा - विभावरी सघन;
अलस, करुण तमावरण !
महान्धकार चीर कय
बढ़ल विमल रश्मि - चरण !

कम्बु - नाद भय रहल,
सुछन्द - नृत्य - नाटिका !
स्वतंत्र देश मे खिलल
नवीन दीप - मालिका !

फहरि रहल विजय -ध्वजा !
लजैल तारकक प्रभा !
कि आरती अशेष विश्व—
आरती रहल सजा ?

विमुग्ध रूप - ज्योति स
निकुंज - वीथि - वाटिका !
स्वतंत्र देश मे खिलल
नवीन दीप - मालिका !

अबैत छथि सुहासिनी
अमर्त्य सुख - विलासिनी
सदर्प आइ राजलक्ष्मि
कमल - दल - निवासिनी !

प्रपूर्ण अमृत - रस - कलश,
प्रफुल्ल प्राण - गीतिका !
स्वतंत्र देश मे खिलल
नवीन दीप - मालिका !

काक-ज्योत्स्ना

आइ जागि दुपहरे राति मे
विहग करय लागल कोलाहल !
भूम भय गेल देखि मधु-ज्योत्स्ना,
जे प्रभात प्राची मे जागल !

ई वसन्त-पूर्णिमा, पूर्ण भय
खिलल चन्द्रमा अछि अम्बर मे।
जनु अनाल इन्दीवर विकसित
स्वच्छ-शुभ्र प्रिय नीलम-सर मे।

हमर प्राण, तों कतय पड़ैलह ?
आबह त, देखह ई कौतुक !
पीबि रहल अछि मधुर चन्द्रिका
संसारक शत-शत दृग उत्सुक।

एहन अभागल की तोंही छ ?
सब सँ पागल की तोंही छ ?
यौवन मे उन्माद-ग्रस्त की ?
अनुक्षण जागल की तोंही छ ?

उठह, उठह हे प्राण, छोड़ि
आलस्य, चलह पीयूष-किरण सँ!
इंगित जतय करै 'छि हासिनी
मधु-श्री चन्द्रक वातायन सँ!

युग-युग धरि तों शान्ति, तृप्ति सँ
वञ्चित, क्षुधित-पिपासित रहलह !
आबहु त छोड़ह प्रमाद ई,
यावत काल स्वप्न मे बहलह !

एहन इँजोरिया राति फेर की
आओत एहि नश्वर भूतल मे?
फेरि मिलत संयोग एहन की
जीवन मे, की नभ-मण्डल मे?

मेघदूत

(१)

पावि यक्ष केओ प्रभुक शाप सँ
वष भरिक निर्वासन,
अकर्मण्य अधिकार-भ्रष्ट भय
प्रिया - विरह मे उन्मन

आयल रामगिरिक आश्रमपर
जतय सघन- शीतल छल तरुवर

जनक-सुताक स्नान सँ जल छल
जाहि स्थलक अति पावन।

(२)

जखन बिताओल ओहि शैलपर
ओ कामी किछु मास
खँसि पड़लैक हाथ सँ कंचन—
कंकण बिना प्रयास।

तोड़ि रहल हो जेना दुरन्त,
कठिन शिला तियग गजदन्त,

नव आषाढक प्रथम दिवस मे
देखल मेघोल्लास !

(३)

ओहि कुतूहल - जनक धनक
आगाँ मे धनदक दास
चिन्ता कैल ठाढ़ भय
अभ्यन्तर मे शोकोच्छ्वास।

सुखी जनहु भय जाइछि उन्मन,
जखन करै अछि मेघक दर्शन।

तखन कथे की हुनक करथि जे
दूर देश मे वास ?
और कामना करथि प्रिया—
कण्ठक आलिंगन—पाश।

(४)

लय जाएत घन कुशल - वार्त्ता
(निकट देखि कय श्रावण)
एहि प्रकारैं होएत प्रेयसिक
प्राणक ओ अवलम्बन !

ई विचारि देलक नीरव,
अर्घ्य कुटज सुमनक अभिनव;

स्वागत करैत मेघ सँ बाजल
प्रीति - वचन प्रिय तत्क्षण।

(५)

कतय मेघ जल-धूम-ज्योति ?
ओ पवनक जड़ संघात ?
कतय चतुर-जन-द्वारा प्रेषित
प्रिय सन्देशक बात ?

एकर यक्ष किछु ध्यान न देल।
उत्कण्ठित भय याचक भेल।

जड़ - चेतनक भेद रहैत अछि
कामी कैं नहि ज्ञात।

(६)

हम जनैत छी इन्द्रक तों छह
प्रमुख सखा विख्यात।
बहुरूपी, जग-विदित पुष्कला—
वर्तक - कुल - संजात।

यद्यपि विफल होए, से ठीक;
गुणी व्यक्ति सँ माँगव नीक।

सफल मनोरथ भेनहु याचना
किन्तु, अधम सँ अनुचित थीक।

प्रार्थी छी हम अतः तोरा सँ
विरही दैब-वशात्।

(७)

कामातुरक शरण छह तोंही,
तैं लय जाह सँदेश।
हे पयोद, धनपतिक क्रोध सँ
पाओल विरह - कलेश।

अलका नामक पुरी कुबेरक;
जकर भवन - समूह नभचुम्बी
कैलासालय-स्थित महेश्वरक—

भाल-चन्द्रिका सँ रहैत अछि
निर्मल बनल विशेष।

(८)

जाएत तोरा देखतीह गगन मे
पथिक — बधू सोच्छ्वास।
मुख सँ केश हटाय और कय
प्रियागमक विश्वास।

हमरा सन सौभाग्य - विहीन
के अछि एहन परक आधीन ?

एना उपेक्षित करत प्रिया कैं
जे हा ! विरह—हताश ?

(९)

दय रहलछि अनुकूल प्रेरणा
लह-लह मन्द समीर ।
वाम भाग मे चातक करइछ
मधर शब्द गम्भीर ।

गर्भाधानक सुख सँ तत्पर
पाँति बान्हि कय नभ मे सुन्दर

सँगहि संग बलाका लय कै
चलतह तोरा अधीर ।

(१०)

करबह निश्चय कहुना जीवित
पतिव्रता भाउजक दर्शन ।
साँस लैत जे बरु, प्रियमिलनक
दिन गनैत होएतीह प्रतिक्षण ।

प्रणय-युक्त नारीक हृदय,
विरहक जखन अबैछ समय,

आशे सँ बान्हल रहि जाइछ
जे सुकुमार सुमन-मन ।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ बिज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि। (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेशण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक। एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं। रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय। एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत। परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो। (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय। एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि। ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि। बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशो मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा।